प्रगति ग्रामीण विकास संस्था

बैतूल

वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024

प्रगति ग्रामीण विकास संस्था

बैतूल

प्रगति ग्रामीण विकास संस्था बैतूल का कार्यक्षेत्र बैतूल जिले के भीमपुर विकासखण्ड की चार पंचायतों के 16 ग्रामों एवं ढानों में लोगो के बीच जागरूकता एवं बेहतर समन्वय को स्थापित करने के उद्धेश्य से किया गया जिसमें मुख्य रूप से प्राक़ितक खेती ,स्वास्थ्य शिक्षा का महत्व व उसकी अनिवार्यता ,शिक्षा में सुधार ,बेहतर पारस्परिक समन्वय, सामुदायिक एकता ,स्वच्छता संबंधी, जलसंरक्षण संबंधी व़क्षारोपण पर्यावरण संरक्षण ,पंचायतराज व्यवस्था में समुदाय की सक्रिय भागीदारी , समुदाय के लोगो के आर्थिक ,सामाजिक बदलाव के लिये बैठके प्रशिक्षण के माध्यम से अपने विकास के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया।

यह क्षेत्र पहाडी पथरीला और बंजर है इस कारण से यहॉ के निवासी केवल बरसात के दिनों में होने वाली फसल का उत्पादन ही ले पाते और बाकी समय में काम करने के लिये ये परिवारों के सदस्यों को बाहर काम करने जाना पडता है।

प्राकृतिक खेती –' प्राकृतिक खेती का उद्धेश्य कृषि प्रणालियों और इसकी चुनौतियों का प्रबंधन करने के लिए प्रकृति की शक्तिका लाभ उठाना है , जबकि मिट्टी की गुणवता मे सुधार ,खेती की कम लागत ,किसानों के लिए उच्च शुध्द आय ,जल सुरक्षा में सुधार ओर बेहतर पोषण परिणाम प्राप्त करना है। इसमें कृषि पारिस्थितिकी आधारित विविध कृषि प्रणालियॉ शामिल है जो फसलों ,पेडों पशुधन को कार्यात्मक जैव विविधता के साथ एकीक़त करती है।

उद्धेश्य –

1. रासायनिक उव्ररकों ,कीटनाशकों , खरपतवार नाशकों के जैविक विकल्पों को प्रोत्साहित करके किसानों की आय को निरंतर ओर टिकाउ तरीके से बढाना।
2. बहुस्तरीय फसल और पारंपिरक बीजों ,फसलों और उनकी किस्मों के उपयोग के माध्यम से कृषि पारिस्थितिक रूप से उपयुकत फसल विविधीकरण ओर जैव विविधता को बढावा देना।
3. स्थानीय उद्दयमियों ,सामुदायिक संस्थाओं को मजबूत करना अौर संबंधित हितधारकों विशेष रूप से महिलाओं की क्षमता का निर्माण करना।
4. सामुदायिक संसाधन व्यक्ति आधारित कृषि विस्तार प्रणाली विकसित करना। (सीआरपी)
5. छोटे किसानो को ऋण के बोझ से बचाना ,किसानों की आय में स्थिर , निरंतर और टिकाउ वृध्दि करना।
6. प्राकृतिक खेती में बहुत संभावनायें है क्योकि यह मुख्य रूप से ऑनफार्म बायोमास रीसाइक्लिगं पर आधारित है जिसमें बायोमास मल्चिंग, ऑनमूत्र फार्मूलेशन फार्म गोबर का उपयोग समय समय पर मिट्टी का वातन और सभी सिंथेटिक रासायनिक इनपुट पर निर्भरता कम करने पर जोर दिया जाता है ।

आउटपुट – किसानों की भूमि की तैयार फसल जैव विविधता ,बीज उपचार ,प्रबंधन ,कीट ओर रोग प्रबंधन ,पोषक तत्व आदि पर प्रशिक्षण दिया गया। 157 किसानो ने सब्जी भाजी में

- प्राकृतिक उर्वरक एवं दवाओं का उपयोग 157 किसानों किया।
- खरीफ की फसल में 9 किसानो ने 12 एकड में मक्का एवं धान की फसल में प्राकृतिक उर्वरक एवं दवाओं का उपयोग किया।
- रबी की फसल में 54 किसानो ने 64 एक्ड भूमि में चना मंसूर एवं गेहूँ की फसल में प्राकृतिक उर्वरक एवं दवाओं का उपयोग किया।

- फसल कटाई के बाद चार ग्राम के किसानों ने 889 किंवटल मक्का एकत्र किया और उसे बाजार में बेचकर 266700 रूपयें का लाभ कमाया।
- बीजो की गुणवता के लिए चार संसाधन केन्द्रो में किसानो को बीज ग्रेिडग मशीने प्राप्त हुई।

अधोसंरचना –

- कार्यक्षेत्र के चार ग्रामों में जैविक संसाधन केंद्र एवं चार किसान फील्ड स्कूल ग्राम भांडवा, पीपलढाना और मानकदंड पातरी में बनाये गये।
- चार ग्रामों में अनाज बैक के लिये बांस से बनी कोठियॉ बनाई गई जिसमें बीज भंडार किया जायेगा।
- अनाज बैक से ग्राम के जरूरत ग्राम ही ही पुरी होगी सेइ साहुकारों एवं व्यापारियों से अनाज खाने एवं बोने के दुसरो पर निर्भरता समाप्त होगी तथा किसान कर्ज के दुशचक्र से बचेगा।
- व्यापरियो साहुकारो सहकारियो बैको प्रायवेट कम्पनीयों से अधिक ब्याज पर अनाज देना पडता था जिससे मुक्त होगे।
- पंचायत पंच सरपंच, महिला स्वयं सहायता समूह के सदस्य, युवा और साथी किसान के साथ क्षमता निर्माण किये गये 79 प्रतिभागियो ने भाग लिया।
- कृषि क्षेत्र में प्राकृतिक खेती से शुरूआती दौर में उत्पादकता में थोड़ी कमी आ सकती है, लेकिन प्राकृतिक खेती जारी रखने से उत्पादकता बढ़ेगी और भूमि की उर्वरता भी बढ़ेगी, जिससे किसान परिवारों की आय में निरंतर वृद्धि होगी।
- प्राकृतिक खेती में शुरूआती वर्ष में कम उत्पादन होता है जो प्रति एकड़ दो क्विंटल तक होता है। जिससे किसान को दो से तीन हजार रुपए का घाटा होता है, लेकिन दो से तीन साल में भूमि की गुणवत्ता बढ़ने के बाद उत्पादन बढ़ने लगेगा और खर्च कम होगा। अधिक लाभ कमाएंगे।
- कृषि में खाद बनाने से लेकर उपयोग तक ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी देखी गई –जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत और दशपर्णी, अग्निस्त्र , ब्रम्हास्त्र आदि औषधियों को कृषि कार्यों के लिए प्रयोग किया गया तथा प्राकृतिक खेती के संबंध में प्रत्येक महिला किसान और उसके परिवार ने मिलकर काम किया। वे ग्राम पंचायत बैठकों, स्वयं सहायता समूह बैठकों आदि जैसे विभिन्न मंचों पर प्राकृतिक खेती की जानकारी और सीख को साझा भी कर रही हैं।

परियोजना क्षेत्र में की जाने वाली कृषि गतिविधियों के लिए कृषि विभागों एवं पंचायतों के साथ अभिसरण –

- ग्राम पंचायतों में कृषि गतिविधि के लिए जल संरक्षण हेतू मनरेगा के तहत एक करोड़ 45 लाख रूपये का प्रस्ताव पारित किये गये जिसका कार्य 2023 जुलाई से प्रारंभ हो गया।
- कृषि विभाग से 35 किसानो को स्प्रिंकलर और पाईप एवं 04 किसानों को पाईप मिले।
- कृषि विभाग से आठ किसानों को चना 320 किलो , आठ किसानों को 5 किलोग्राम एवं चार किसानों 6 किवंटल गेहूँ का बीज उपलब्ध कराये गयें।

चुनौतियॉ

- प्राकृतिक खेती में उत्पादकता के बारे में किसानों में आत्मविश्वास की कमी है।
- किसानो को सरकारी योजनाओ की जानकारी सही समय पर नही मिलना।
- किसानों को सही समय पर बीज उपलब्ध न होना।
- परंपरागत बीज दिन प्रतिदिन समाप्त हो रहे है।

- ❖ अत्यधिक वर्षा एक बडी चुनौती बनकर उभरी है तथा कभी भी वर्षा हो जाना ,कम वर्षा भी एक चुनौती है ।

मुददे /सीख

- भूमि की मिटटी की जॉच होनी चाहिये ।
- किसानो सही समय पर खाद ओर दवाईयॉ नही डाल पाते है ।
- किसानो को समय समय पर मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है ।
- किसानों को बीजो की ग्रेडिंग और उचित बाजार मूल्य न मिलना ।
- प्राकृतिक खेती के प्रति किसानो के नजरिये में बदलाव आया ।
- रासायनिक खेती की तुलना में प्राकृतिक खेती में कम खर्च ।
- किसान को अपने आत्मविश्वास पर संदेह है कि प्राकृतिक खेती में कितना उत्पादन होगा ।
- प्रशिक्षण के दौरान सैध्दांतिक चीजों के साथ साथ व्यवहारिक पर परीक्षण भी अवश्य करना चाहिये । ऐसा करके बताना चाहिये ताकि किसान परीक्षण होते हुये भी देख सके ओर उनकी समझ उस विषयवस्तु पर आधारित हो जो अधिक प्रभावी हो सके ।

पंचायती राज व्यवस्था – पंचायती राज व्यवस्था के अन्तर्गत भीमपुर विकासखण्ड की चार पंचायत में ग्राम सभा के माध्यम से पंचायतों के प्रतिनिधियो के साथ पंचायतरराज व्यवस्था तथा पॉचवी अनुसूची के अन्तर्गत ग्राम सभा को दिये गये अधिकारो ग्राम स्वराज् व्यवस्था ,शिक्षा ,स्वास्थ्य कार्यक्रम के नीति नियमों तथा सरकार की ग्राम स्वराज रूपी सरल शासन प्रणाली को सरल रूप से बताते हुये जन समुदाय व प्रतिनिधियो में उत्तरदायित्व को लेकर उनमें जागरूकता पैदा करना जिससे ज्ञान व समझ के आधार पर उत्साह एवं प्रेरणा स्वरूप वे स्वंय निण्रय लेने की क्षमता को विकसित कर सके । जिससे उनमें स्वंय के सहयोग एवं सामुदायिक सोच को विकसित जा सके ।

उपलिब्धयॉ –

- ❖ ग्राम सभा की बैठको में लोगो की उपस्थिति में बढी ।
- ❖ सरकारी योजनाओ का लाभ ग्रामवासीयो को मिलने लगा।
- ❖ जल जंगल ,जमीन का महत्व को जानते हुये कृषि भूमि को सुधारने ,पानी रोकने व व़क्षारोपण करने कार्य करने में रूची बढने लगी ।

प्रमोदकुमार नाईक

सचिव

TECNO
SPARK

बीज संग्रहण
भाण्डवा
TECNO